प्रथम अध्याय

उपन्यास और हितिहासबोध

(क) हितिहास और हितिहासबोध : अन्तःसंबंध
(ख) समसामयिक साहित्य और हितिहासबोध
(ग) साहित्य में हितिहासबोध : संदर्भ उपन्यास
(घ) हिन्दी उपन्यास का विकास और हितिहासबोध
जीस्की दल के आधिकारिक दस्तावेज तक आते-आते हमारे सामाजिक कार्य
और वैश्विक जगत में तीव्र परिवर्तन घटित हुए हैं। सामाजिक व्यक्तियों
के ढहने तथा भूमिकास्पद उद्योगकर्ता के तीव्र प्रभाव ने पुरानी स्थापित
विचारधाराओं को भी संपन्न ने फेरे में ला लौटा किया है। अती तीव्र गति
के बदले हर योग्य हो सम्मान लेने हेतु एक और नई विचारधाराएँ अपना
स्थान बना रही है तो इसके तथा सामाजिक कार्य पद्धति भी नए
गतियों के बारे अपने को ढाले का प्रयास कर रही है। उच्च-आधुनिकता
का प्रभाव साहित्य के लेख सान-बिनान की अन्य शाखाओं पर भी पड़ हुआ
है। इसके परिणामस्वरूप जहाँ एक और उपन्यास पैसे साहित्यकला में बना
और शिल्प का नविन परिवर्तन दृष्टिगोचर हो रहे हैं, वहाँ दुसरी और
हितहास में भी उपाधी या निपटेंगी हितहास पृष्ठ का प्रवर्तन हो रहा
है। हितहास और उपन्यास दोनों का अपने समाजसेवी मात्र के जीवन
संबंध होता है। अतः समाजसेवी व्यक्ति में आए। कदाचित् ने हितहास और
उपन्यास के अन्तःसंबंध को भी प्रभावित किया है।

हितहास हितहासवाच और उपन्यास के अन्तःसंबंधों की पहलाई करने
से पूर्व, हितहास और हितहासवाच की सम्पूर्ण विवेचना आवश्यक है।

(क) हितहास और हितहासवाच : अन्तःसंबंध

हितहास और हितहासवाच की अवधारणाएँ एक दूसरे पर अन्यो-यान्य है।
दोनों अवधारणाओं में समानता के तत्त्व होने के साथ-साथ, परस्पर
भिन्नता भी दृष्टिगोचर होती है। हितहासवाच की विवेचना से पूर्व हितहास
संबंधी विभिन्न परिवर्तनाओं तथा अवधारणाओं का विवेचन आवश्यक है।

सामान्यतः भूतकालीन तथ्यों का नाल द्वारानाक समय अभ्यान
हितहास कहा जाता है। हितहास संबंधी अपने भारागार पौद्र है। हितहास
क्या है? सामाजिक दृष्टि से हितहास का अर्थ रहसा ही हुआ था या रहसा ही
यहाँ है। इस आधार पर अतित के किसी भी सत्य को इतिहास की संज्ञा दी जा सकती है। अतित के गतन अंधासार में जो कुछ खिंचाया है, उस सत्य के ज्ञान का त्योहार प्रस्तुत करना इतिहासकार के लिए कठिन है, अतः इसके अपूर्ण अवशेष अतित में जो कुछ देखा गया है अथवा भोज्य है, उसमें उसकी व्यवस्थित रूप से फलस्वरूप उस सत्य की सामृत्य के लिए, उसके बाहर विकास फिर उसकी भवानत्त्व प्रतिकृतियाँ का प्रभाव भी परिलिखित होता है। स्थानिक प्रतिपाद सत्य कार्य के आख्यान को धोखा भिन्न बन्ध में प्रस्तुत करता है।

इतिहास का अर्थ केवल घटनाओं का विवरण मात्र प्रस्तुत कर देना नहीं है। इतिहास में हीं मूल्याभिव्यक्ति घटनाओं का दर्शन ही नहीं होता, अन्यरूप उन घटनाओं की परिस्थितियों और परिणामों का उद्देश्य करना अपूर्ण हो जाता है। यहाँ इतिहास मूल्य की अतित के परिणामों के अन्तर्गत करता है और सत्य में अतित की मूल को युगाधिकरण का लक्ष भी देता है। कार्य कारण के संबंध का विचार करने के पश्चात् इतिहास के आधार पर हम निर्धारित भविष्य रच सकते हैं।

डाओ गोपाल दामोदर तामकर के भवानुसार "इतिहास भविष्य निर्धारित करने में विशेष सहायता प्रदान करता है।" 1

प्रसिद्ध विद्वान् डाओ गौरीशङ्कर हीरानन्द के विचार से "अतित के गौरव तथा घटनाओं के उदाहरणों में मूल्य, ज्ञाति एवं राज्य एवं जन संबंधकी शक्ति का संग्रह होता है, उसे इतिहास के अन्तिरित अन्य उपयोगों के प्राप्त करने सुरक्षित रखना कठिन ही नहीं प्रत्युत एक प्रकार है। इतिहास भूमिकाल से अतित व्यस्तित तथा भविष्य की अद्वितीय वृत्ति को गान लगी किताबें द्वारा खड़ा प्रकाशित करता रहता है।" 2

1. डाओ गोपाल दामोदर तामकर - मराठों का उत्थान पत्तन, पृ 3
2. डाओ गौरीशङ्कर हीरानन्द ओझा - राजकृतान का इतिहास, पृ 10
सबसे इतिहास अलिको जीवित राजन का एक मान वाहन है जिसमें मानव जीवन के ज्ञान का भर्तार निश्चित रखा है।

हाँ राजेन्द्र प्रसाद इतिहास को नीर स्थानों की कहानी नहीं बताते वरन हेवा शास्त्र बताते हैं - जो हमें मानवीय समाज और संस्थाओं के ज्ञान का पूरा ज्ञान कराता है।

इस प्रकार इतिहास मानव के बिस्तर की कहानी है, जो आदि के अंत तक रौचक है। इस प्रकार वहा जा सकता है कि इतिहास किसी देश आया मुनुगा के भुज्ञ बाल का पर्यावरण करता है, वर्तमान और भविष्य का नहीं, जो हो यी है वह इतिहास का विषय है, जो कुछ है, या आछे होना चाहिए, वह इतिहास का विषय नहीं। इतिहास वीटी हुए वातों का सच्चा व्याख्या देता है। ऐसे युग का व्याख्या होने पर भी इतिहास का महत्व और उसकी सिध्धांत वर्तमान काल के लिए तथा भविष्य की गतिविधि के लिए किसी तरह का नहीं है।

अतः परम्परागत इतिहास दृष्टि को हाँ व्याख्या तथ्य के एक शब्दों में यूज़ बदल किया जा सकता है — 'इतिहास वह ही है जो ही ज्ञान राशि है जिसमें मानवीय स्वभाव तथा ध्वनि का में तथा स्वभाव का सब कार (अतिरिक्त, वर्तमान तथा भविष्य) के लिए समावेश होता है। अतः इतिहास किसी देश के ज्ञान का वह संप्रभु नहीं है, जिसके वर्तमा की जनता, राजकीय परम्पराओं का राजनीतिक किया, सामाजिक आधि संस्थाएं, उसके धर्म, दर्शन, संस्कृति तथा राजप का स्वभाव उपस्थिती होता है। इन सभी को पिलाकर संपूर्ण होता है जिनके माध्यम से मानव गुजरता है।

1. हाँ राजेन्द्र प्रसाद - साहित्य शिक्षा और संस्कृति, पृ 118
2. हाँ व्याख्या तथ्य - प्राचीन ऐतिहासिक उपन्यास : इतिहास और कला, पृ 5
द्वारा हितिहास को कैपल राष्ट्र एवं कांग्रेस बड़ा करना उचित नहीं उसका दैत्र सम्पूर्ण जात है। हितिहास चित्रण के दृष्टिव में पारस्परिक चित्रक है खान का नाम पहलवान है। उन्होंने अपनी पुस्तक 'हितिहास कवय है', में हितिहास के संबंध में अपनी धारणा निम्न शब्दों में व्यक्त की है --

'आज के हितिहासकार लेखकों का सामाजिक तौर पर पुनर्वाच करता है और उनकी एक सामाजिक व्याख्या प्रस्तुत करता है जिसकी रोशनी में उससे तथा अन्य लोगों का जुड़ा खिया था। वैसे-वैसे उसका काम आगे खुलता है; वैसे-वैसे ही लेखकों की व्याख्या चुनाव तथा वाहिकाएँ में एक अन्य अलग तथा संबंध: अत्यधिक, अनेक परिवर्तन होता रहता है। शं पारस्परिक खिया में वैभव और अलिंय की पारस्परिकता भी भिड़ी होती है, वही निवाहत हितिहासकार वैभव का अं होता है, जब तक वाह अलिंय के। हितिहासकार और हितिहास के लेखक एक इतिहास के लिए आवश्यक है। लेखकों के लिए हितिहासकार निस्ता जब का और व्यक्त होता है। हितिहासकार के प्रस्ताव लेखक पूर्ण और प्रभावी होते है। अत: हितिहास कवय है, अता प्रश्न का पौरा पहला उल्लंघन, यह होगा कि हितिहास हितिहासकार और उसके लेखकों की खिया-विभिन्न खिया की एक अन्वारद प्रक्षिप्त है। अलिंय और वैभव के बीच एक अल्पकम संबंध है।

इस प्रकार कार महौसद, हितिहास को वैभव है जोड़कर देखते है, उनके लिए हितिहास व्यावहार जीवंत तथा परिवर्तनशील है।

हितिहास संवर्ती इस विवेचन के बाद निष्कषण है में कहा जा सकता है कि हितिहास न विचार है, न मात्र घटनाओं का संकलन, न महानु गुरुचाँद की शहीनी मात्र ही है। अपितु वह निरंतर मानवीय शक्तियों की श्रृंखला है।

1. है ५० कार - हितिहास कवय है, मूल 21 - अनुवाद
जो पत्रक के अंतर्गत ली गई, धार्मिक, आधिक जीवन पर प्रकाश डालते हैं। प्रियक देव्याकार से अपने लोग की सामाजिक जीवन के साथ सामाजिक परिस्थितियों के द्वारा प्रभावित होता है। देव्याकार लेख कल्याण ज्ञात में भी विभाजन करता है। अनुमानित सत्य का वहारा लेता है। उस प्रकार देव्याकार वर्तमान के आलोक में अंतित की सौज है।

देव्याकार की विभिन्न अवधारणाएं, इस बात को स्पष्ट करती है कि देव्याकार को देखने समक्ष का दृष्टिकोण हर देव्याकार सत्या व्यक्ति विश्वास का अला हो सकता है। देव्याकार के प्रति यह विश्वास दृष्टिकोण हर देव्याकार वौद्ध कहलाता है। यदि रचनाकार के दृष्टिकोण के बात की जाए तो राहा जा सकता है कि रचनाकार के स्वरूप उपाधि यथार्थ स्वरूप तथा सत्यिनी होता है। यथार्थ की गतिशीलता की पहचान और उसका विभाजन हर उपन्यासनक दृष्टि का मुल्य दायित्व है। यथार्थ की यह गतिशीलता की पहचान, रचनाकार अपने 'विकल्प' अथवा 'यथार्थ दृष्टि' के कार अधृत है।

वस्तुतः यह विकल्प हर रचनाकार का देव्याकार वौद्ध कहलाता है।

वस्तुतः: देव्याकार-लेखन में भी सब कुछ गढ़ा अथवा निर्मित नहीं होता। देव्याकार लेखन का आधार तथ्य, उसकी नींव पर भरने वाली स्थापना और उस स्थापना का निर्माण परिवर्तन होता है। यह अन्वय प्रतिक्षित रहता है। देव्याकार संभवी किसी सिद्धांत का जन्म होता है। यह सिद्धांत हर देव्याकार को देखने का दृष्टिकोण अथवा देव्याकार वौद्ध कहलाता है। अतः राहा जा सकता है कि देव्याकार वौद्ध, देव्याकार के तथ्य तथा स्थापनाओं के नर्तक-प्रतिक्षाया का परिणाम है।

लेकिन यह प्रतिक्ष भी एकैदिवी सत्या व्यापारी नहीं है। देव्याकार के तथ्य भी निर्वाचित तथा सत्यिनियत नहीं है। यह देव्याकार की अपनी वैयक्ति अथवा वौद्ध है जो तथ्यों की गुणणित कहलाता है। इसी कारण इसी कारण 'देव्याकार के तथ्य मुहावरे का प्रयोग करता है। तथ्यों की
हितिहास के सबसे में एक प्रक्रिया हितिहास के यून हितिहासविद्युत र हितिहास
वौध का निम्न न परिस्थितियों के होता है जिन्हें हितिहासविद्युत रह
रहा है अथवा समांगिक परिस्थितियों ही हितिहासविद्युत के हितिहासविद्युत
का निम्न निर्धारता है।

(ख) समांगिक वौध और हितिहासविद्युत

हितिहास के सबसे में एक प्रक्रिया अवधारणा है कि हितिहास विद्युत
के आलोक में अतीत की व्याख्या है। विद्युत के आलोक का अभिन्न शक्ति, स्पष्ट
चारण चेतना, स्पष्ट चेतना का निर्णय, समांगिक वौध के
विभिन्न पक्ष की आपसी प्रतियोगिता से होता है। इस प्रकार कहा
जा सकता है कि हितिहासविद्युत का अपने समांगिक वौध से गहरा संबंध
होता है।

वस्तुतः हितिहास का अभ्यर्थन भी, विद्युत की सम्भावना का ही एक
उपकरण है। आनंद प्रकाश प्रस्तुत यह है - "क्या हितिहास के अभ्यर्थन में हितिहास
का का कथा शामिल नहीं है, तथा का ग्रहण ही अभ्यर्थन की उपयोगिता
और प्राचीनता का महत्वपूर्ण, वैष अविचारों आधार नहीं है। मेरा
ज्ञात यह है कि यदि यह न होता वो इस बीते हुए कल में स्वातंत्र्य ही नहीं

1. अटलांटिक मंथनी - अनुवाद 1910, पृभ 528 - "हितिहास यथा हैं
से उल्लेख, पृभ 13
लेते, उसे बीता मानकर झूठ बेहतर और केवल निरेव वर्तमान में रच का जाते।
लेकिन जाहिर है यह होता नहीं। इससे विपरीत हम बोले हुए कल के अनुभवों
की मदद लेकर जो मानवता के सामान्य अनुभव है, उन्हें आज के सार्थक रूप
ही कुहले हैं और वह करते हैं जो हमारी सफलता से सही, स्वीकार्य और व्यापक
अर्थ में नैतिक है। अनुभवों की मदद का तालमूल उस वास्तविक कथन है जो
मनुष्य के व्यवहार दे नियन्त्रित-प्रेरित होकर आनेवाले कल का याग प्रस्तुत
करती है।

हितिहासविध के संबंध में यह परिवलन बीसवीं शताब्दी के प्रारंभिक
दशकों में ही हुआ। उसके पूर्व "तथ्य सम्प्रदाय" का हितिहास संक्षेपी चित्रण
में बोलवाया था। "तथ्यों" को पत्रित मानकर उनकी लोज की जाती थी।
"तथ्य सम्प्रदाय" पर हमला करते वालों पर व्यवहार नहीं दिया जाता था, परंतु
पिछली शताब्दी के अर्थात में यह प्रकाश हटली में फैला। वहाँ कोई नए
हितिहास दर्शन की बात कर रहा था। "उसके पौष्पको की फिर हितिहास
समसामयिक हितिहास रखे होते हैं। इसका अर्थ यह है कि हितिहास लेखन आचरण
के संबंध में अनुभवों देव और वर्तमान की समस्याओं के प्रकाश में अर्थ की
देखने है और हितिहासकार का काम विवरण देना नहीं, मूल्यांकन करना
होता है क्योंकि अगर वह मूल्यांकन नहीं करे तो उसे कैसे पता चलेगा कि
व्यवहार लिखना है।

वर्तमान याचिक फिस प्रकाश हितिहासविध को प्रभावित करता है, हम
वात के स्पष्ट उदाहरण, उन्नीसवीं शताब्दी के अन्त तथा बीसवीं शती के
प्रारंभ में भारतीय हितिहासकार द्वारा लिखे हितिहासविध हैं। हम हितिहासों
के व्यक्त प्राचीन भारत की गौरव गाथा चलुः तत्कालीन भारत की
परिस्थितियों में निविष्ट थी। वे हितिहासकार, तत्कालीन हीन दशा है

_____________________
1. आनंद प्रकाश - हितिहास और उपन्यास(लेख), हंस, जनवरी 89, पृ 8
2. हों खो कार - हितिहास बया है (अनुवाद हिन्दी), पृ 13
देशवासियों को उचार करने तथा देशवासियों में अत्याचार की भावना उत्पन्न करने के लिए समुदायी भारत की लोग करते हैं जो कि अन्यत्र तथा पारंपारिक सभ्यता से कहीं आगे बढ़कर है। वस्तुतः इसी हितोस्वरूप से प्रेति होकर तत्कालीन हितोस्वरूप ने अभिनव के भारत के अभिनव तथ्यों को चुना जो उन के स्वयं विचारधार के साथ में ठीक-ठीक योग्य थे। इस प्रकार की तथ्य चयन की दृष्टि उनके हितोस्वरूप का परिणाम थी जो कि तत्कालीन यथार्थ का परिणाम थी। आर. सी. दत्त के लेख के पी. जायस्वल तक के हितोस्वरूप ग्रंथ इस बात के प्रमाण हैं।

वर्तमान यथार्थ पर जोर देने वाले दाशनिकों में कालिंग कुंद का नाम भी उल्लेखनीय है। उनकी पुस्तक आश्विनिक अपने संस्कार के स्वार्थ के लिए हर हितोस्वरूप वर्तमान यथार्थ से अभावत रहता है।

ई. सव. कार ने कालिंगकुंद के दृष्टिकोण को स्पष्ट करते हुए कहा - "हितोस्वरूप दल का संबंध न तो अपने आप में अभिनव के सेवा होता है न ही अपने आप में अभिनय के बारे में हितोस्वरूप के विचारों में विकल्प उसका संबंध दोनों के पारंपरिक संबंध से होता है (यह सिद्धान्त वायु हितोस्वरूप शब्द की दो भावनाओं को प्रतिविम्बित करता है, स्कू: हितोस्वरूप दल में गई पढ़ताल और दूर अभिनव के घटनाओं का वह ऊपर जिसके वह पद्धति करता है)। अभिनव हितोस्वरूप हितोस्वरूप करता है, मृत अभिनव नहीं होता, बल्कि यूँ हितोस्वरूप होता है जो कि इसी पर अध्ययन में बहुत चिन्तित रहता है; किंतु हितोस्वरूप के लिए अभिनव में पठित पद्धति तब तक होती है जब तक वह उनके पीछे कार्यरत विचार को नहीं समझ सकता है। अतः प्रत्येक विचार का हितोस्वरूप होता है और आचार्य हितोस्वरूप के मन में उन विचारों का पुनर्निर्माण होता है, जिसका हितोस्वरूप वह अभिनव कर रहा होता है। आचार्य मन में मन के अभिनय का पुनर्निर्माण उसके अनुभुत अभियानों पर आधारित होता है। मगर अपने आप में यह एक अनुभव भी प्रक्षेपण नहीं है और केवल तथ्यों के जोन में तक सीमित नहीं हो सकता है। इसके प्रतिच्छेद पुनर्निर्माण का यह
प्रश्न प्राप्त होने के बाद, उन्होंने प्रश्न में निर्धारित करते हैं और यही सफलता उन्हें ऐतिहासिक तथ्य बनाती है।

प्रथम औपचारिक प्रश्न जवाब के संबंध में है - "इतिहास, इतिहासकार का अनुभव है। इतिहासकार के अभाव और कोई इसका निर्माण नहीं करता और उसका निर्माण करने का सफायत रास्ता है इतिहास लेख।"

इस प्रकार के विचारों ने इतिहासकार संबंध इसे चिंतन को गढ़ा इसे प्रभावित किया है। हाँ, इस कार का मानना है - "प्रथम बात यह जब कि हिंदुस्तान के तथ्य में कोई सुद है में नहीं मिलते क्यों कि सुद है में वे न रहते हैं, न रह सकते हैं, वे लेखक लेख के मस्तिष्क में संग कर आते हैं। बाद में जब हम इतिहास का कोई कार्य सुन करते हैं तो हमारा ध्यान उसके पहले उसके प्राप्त तथ्यों पर नहीं होना चाहिए बल्कि उस इतिहासकार पर होना चाहिए, जिन्हें उसे लिखा है।"

कार महोदय की इस तिथि का सथ यही है कि हिंदुस्तान अतीत के नहीं वर्तमान में जीता है। इसी कारण उन्होंने इतिहासकार को सही दी है कि - "आदि को अतीत के भेदन हाथों से बुद को बुद का लेना चाहिए। हिंदुस्तानकार का काम न तो अन्तित से प्यार करना है और न बुद को अतीत से मुस्ल करना, बल्कि वर्तमान को समझने के लिए उसे अतीत के अभ्यस्त में दर्शाने प्राप्त करनी चाहिए और अपने सफर को वर्तमान की कुंजी के बेल में इस्तेमाल करना चाहिए।"

----------------------
1. हाँ, इस - इतिहास लेख, पृ 14
2. प्रथम औपचारिक - इतिहासकार एंड जुड़व मोहल्ल, 1933, पृ 99
3. हाँ, इस - इतिहास लेख, पृ 14
4. वाही, पृ 17
केवल वक्तमान की आबों से ही अतीत की देख सकते हैं। इतिहासकार अपने युग के साथ अपने मानकीय अवस्थाय की राजा पर जुड़ा होता है। वहा क फि प्राचीन, नागराज मैं शब्द भी अपना तात्विक ध्यान तथा अर्थ रखते हैं, हन अभिभाष्यों के इतिहासकार भी उन्हें मुक्त नहीं कर सकता।

इतिहासकारों, आलोककों के शब्दों से स्पष्ट है कि इतिहासचरो का निर्माण समस्यामय यथार्थ के द्वारा ही होता है। कोई भी व्यक्ति इससे मुक्त नहीं हो सकता। यदि रचनाकार इतिहास के किसी भी कल-सत्र को अपनी रचना की विषय वस्तु बनाता है तो भी उसकी चेतना समस्यामय ही रहती है।

उपमुख्य धारणा बहुत हद तक की है। लेकिन यह धारणा में भी अन्तर्निहित बदले हैं, जिससे वाक्यात्मक रचना होगा। यह धारणा वस्तुनिष्ठ इतिहास की पूरी अखरारणा को ही नकार पैदा है। यथापि इतिहास वक्तमान से अवश्यक जकर रहता है, लेकिन इतिहास में कुछ न कुछ वस्तुपरक्ता रहती ही है। तथ्यांत्र यथापि इतिहासकार द्वारा आविष्कृत है पर न्यु इतिहासकार उनका मनमाना आविष्कार नहीं कर सकता। वस्तुतः इतिहास एक सत्ता प्रकृति है जिसे है, एच. कार ने ठीक ही "अतीत" और वक्तमान के कीच एक "अर्थात् संवाद" कहा है।

(ग) साहित्य और इतिहासबोध : संदर्भ उपन्यास

--------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------

साहित्य और इतिहास दोनों सम्मिलित हैं। यथापि दोनों अध्ययन के दो भिन्न अनुशासन हैं, तथापि दोनों अनुशासनों का एक दूसरे पर अत्यधिक प्रभाव है। डाय सुनहरा लिखक का मानना है दोनों जीवन के अपरिमाण आं हैं। एक मान साहित्य तथा हिंद में अतीत का सुनदर चित्र दिखाने में अभ्यास हैं, दोनों का ही सार्वजनिक रसायनसूत्र में वहाँ अतीत होता है।

इतिहासकार चित्रित सत्य की बोध है, उसका पोषण है, वह अध्याय के गरिं में क्ये हुए अतीत के रचस्यों को खोलकर खाजा के सामने प्रस्तुत करता है।

इन रचस्यों और सत्यों को साहित्यकार अपनी कल्पना से श्रवण और सुन्दरम् व्यम्प्रवार चारता है, जिसके कारण साहित्य की उपस्थित होती है।
हस प्रकार यदि इतिहास घटनाओं का संकलन और व्याख्या करता है, राष्ट्रों के उत्थान पतन का विशेषण करता है और समाज की सफलताओं का रहस्य प्रकाशित करता है तो साहित्य इतिहास के विषय-वस्तु प्राप्त कर उसे अपनी कल्पना और वृद्धि-योग्य शक्तियों के माध्यम से औजस्विता स्वयं प्रमुखविश्वास प्रदान करता है। और ऐसे बातचीत तथा प्रश्न-उत्तर का निम्नलिखित कहता है, जिसके वह आगामी पीढियों के प्रेमाने ग्रीट का अंश कर सके।

हस्तिहास किसी भी विशेष की राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक के साथ-साथत कलात परिस्थितियों का खिलाफ करता है, जब पाठक उस देशकाल का अभ्यास करता है तो स्वयं कल्पना के माध्यम से अतीत से तादाद-त्योल लेता है। साहित्यकार देशकाल के भावानुसार अभ्यास होता है, वह हस्तिहास के स्वस्तपात्र, घटनाओं आदि गृह करता हुआ स्वतंत्रता के आधार पर ऐसे साहित्य की रचना करता है जो पाठक को समझौता करके उसी देखकर के विचार करे जो साहित्यकार का अभ्यास है।

वस्तुतः साहित्यकार अपने हस्तिहासविवेक से अलग की घटनाओं को एक ऐसा ठिकाना प्रदान करता है, जिससे उन घटनाओं का एक नया ही अर्थ आलोचित हो उठता है। वस्तुतः हस्तिहासविवेक ही वह मूल भित्ति है जिसके सहारे विभिन्न घटनाओं-परिस्थितियों अपना एक-एक अर्थ प्राप्त करती है।

वस्तुतः परंपरागत अर्थों में कहा जाय तो, साहित्यात्मक सामग्री के साहित्यकार ऐसे भाषा में प्रस्तुत करता है कि भाषारूपीकरण संभव ही पाता है। साहित्यकार हस्तिहास के प्रेमाने' गृह करता है और अपनी अल्पकालिक प्रतिभा के प्राणायाम स्वाभाविक प्रतिभा की प्रतिस्थापना करता है। वह हस्तिहास की और अर्थिक कोई का डेटा है। ज्यो वृद्धिक त्यागी का हत्तना है कि - 'हस्तिहास जिसे वापस करते हैं। साहित्य युद्ध के साथ-साथ हृदय

---------------------
1. ज्यो वृद्धिक त्यागी - प्राचीन हस्तिहास के प्राणायाम: हस्तिहास और कला, पृ 6
और आत्मा को भी स्मारक आदर देता है। हितिहासकार केवल सत्य कहानी कहता है, साहित्यकार उसे शिव और सुन्दर रूप से प्रदान करता है तो साहित्यस्तंभ सत्य भी साहित्य स्वभाव के कारण अल्प है। साहित्य पाठक की अनुभूतियों को एक धारात्मक पर प्रस्तुत करता है, वह वर्तमान को अतीत-भविष्य से जोड़कर कार्यकलाप अलंकार का बोध कराता है। वस्तुतः साहित्य भूत-भविष्य का भाषण है। 1

विषाणुपल्लि भारद्वाज की मान्यता भी कुछ हरी प्रकार की है —

"हितिहास अतीत के सत्य का परोक्ष है, अतीत के रहस्यों का उपप्राप्त है, साहित्य सत्य को शिव और सुन्दर का लुक देकर उनके मानव का पथ प्रदर्शित करता है।" 2

हितिहास साहित्य का प्रमुख अंग है। हितिहास मानव जीवन में घड़ी हुए घटनाओं, वरिष्ठस्तंभों एवं संस्कारों का लेखा जोखा है। यह संग्रह को रसायन सृजन के यथार्थ स्वरूप नहीं, फिर भी सब मानते हैं कि हितिहास साहित्य के प्रभाव अंगों में वे एक है। प्रस्तुत उद्देश्य है कि इसे व्यक्त करने वाले साहित्य के प्रभाव अंग जो भी हों, और साहित्य का उपभोक्ता लक्षण इस पर प्रभाव नहीं होता 3। जो भी रचना साहित्यिक है, उसमें नवीनता को आदर करने की क्षमता का होना अविष्कार है। हितिहास को साहित्य की एक क्षौती पर कस कर देखा जाय तो इसे प्रस्तुत होगा कि वहाँ तक हितिहास अतीत की घटनाओं की आवृति करता है। हमारे मन की भावनाओं का गुलामाता है, हमारे मन में प्राणव भरी उद्ध-पुथित पवन देखा जाता है, वहाँ तक वह साहित्य भी है। साहित्य के वै अंश जिनका एक मान्य लघु घटनाविवरण की आवृति करता है, साहित्य नहीं अपितु लेखामात्र है।

1. डांग सुयमा स्वामी - प्राचीन ऐतिहासिक उपन्यास : हितिहास और कला, पृष्ठ 7
2. डांग विषाणुपल्लि भारद्वाज - चुरैले के उपन्यासों में हितिहास
साहित्यकार का संक्षेप इतिहास की सम्पूर्णता से नहीं होता है।

'इतिहासकार का संक्षेप इतिहास की सम्पूर्णता से होता है। उस काल विशेष जिसकी सम्पूर्णता उसे अपेक्षित है। इतिहासकार अपने उपकरणों के द्वारा जो शृंखला करता है, वह देश का जीवन और संस्कृति के उदरोजल मूल्य परिक्रमाओं की स्थायी अथवा इतिहास देखता है।' 1

इतिहासकार राष्ट्राध्यक्ष के चिन्ता नहीं करता, वह तो घटनाओं का सबसे विशेष देखा चाहता है। यहीं इतिहास की पूर्वी होती है।

यदि साहित्यकार की रचना पाठक को संस्कृति कराने में सफल नहीं हो सकती तो उसे साहित्य की संस्कृति नहीं कर पायी। साहित्यकार इतिहास की घटनाओं, चरित्रों को अथवा नाटक ऐसे साहित्य की रचना करता है जो समाज का प्रतीक दिखाता है, जिसमें जनता की आवाज हो। उसमें मानव जीवन का रचना करने की धार्मिक हो और जो उसे क्रांतिकारी मार्ग दिखाता हो।

इस प्रकार साहित्य और इतिहास के संबंध में दृष्टा प्रथम त्यागी की यह बात ठीक ही जान पड़ती है - 'इतिहास यदि मानव समाज की चाहे परिस्थितियों और घटनाओं का देखा है तो साहित्य का इतिहास उसकी आवाज होगी और निर्वाचित बातचीत का आलावा है।' 2

इतिहास क्षमारे राष्ट्र की धरातल है और साहित्य उसकी आत्मकथा।
एक में हम कार्यों और व्याख्यान समाजों की कहानी पढ़ते हैं। दूसरे में हम उसके पालक तथा नैतिक उत्थान की कहानी का अध्ययन करते हैं।

-------------
1. दृष्टा जादिश प्रसाद नागौरी - प्रसाद के इतिहासकार नाटक, पृ 58
2. दृष्टा प्रथम प्राचीन - प्रथम प्राचीन इतिहासकार उपन्यास : इतिहास और कला, पृ ५०
हस्य प्रकार के कहानियाँ जा सकती है कि भारतीय अर्थ व ज़रियापा का संक्षेप घटित है। और देखें यह है कि घटियापा देशका घटना के अनादराज़ आया में प्रस्तुत करता है तो भारतीय उन्नयन है कि विक़िलिस अंश को देखर बहुत अधिक राज्य ठीक में प्रस्तुत करता है कि पालक परम्परा हो उठता है। 

(घ) हिंदी उपन्यास का विकास और घटियापा विभाग

ग्राहित के अनेक दूसरे हस्य की पालक उपन्यास भी भारतीयं हूँ की देन है। भारतीय नव्या-वाणिक नेता के लगातार प्रश्नोत्तरिके आया लीग हूँ यह, हिंदी का ग्राहित अर्थ व स्वभाव: उसी की स्वाभाविक निपटान के आया में सामने आया । हिंदी उपन्यास के संक्षेप में, उसी उद्धव की दृष्टि से यह खाली भी उठाया जाता है कि भारतीय नव्या-वाणिक के वाणिक अनेक अन्य रीति-रीतां की तरह उपन्यास बीधि लोक उपन्यास से आया या उसी उद्धव में भारतीय जात्वान परम्परा की भी कोई भूमिका रही है ? उपन्यास के लिए यह संक्षेपित भारतीय समाज की अनिवार्यता की ओर सैलिक्या जाता है, जिसे व्यक्ति और समाज के दृष्टि की महत्वपूर्ण भूमिका होती है - भारतीय नव्या-वाणिक कालीन समाज उस संक्षेप की दृष्टि पर लड़ा था। जाति द्वारा समाज की रचना के बाद के माध्यम से आया में संक्षेप होने से नामा था। कहीं भी उपन्यास हस्य मध्य-वाणिज्य समाज की आवश्यकताओं और आवश्यकताओं से बुझा होता है। मध्य वाणिज्य के पूर्व लोग इसने विकसित गरजन के पालक रहें हैं और उन्होंने ये कुछ अपना या अपने व्यवसाय की किस्म की अंकित करने की लाज्वा उसी संक्रामित होकर ही उसमें रचनात्मक हस्ताक्षर की दिशा में आग्रह हुए। इन अनुकूल परिस्थितियों के बाद उपन्यास भारत में, श्रीजी के सम्पर्क में आने का ही एक परिणाम था, लेकिन उपन्यास का अपने लोकार्पण के साथ पानियास लोक के कारण, उपन्यास भी भी भारतीय परम्परा के साथ
रस गृहण करने लगा पर उपन्यास में भारत की आल्यान परम्परा के सुविधाकों को ढूंढ़ा जा सकता है।

उपन्यास प्रारंभ है ही अपने व्याख्यात है सीधी मुम्बई करता आया है। व्याख्यात की व्याख्या और उसे नए कोण है अभिव्यक्ति प्रवाह करना उपन्यास का भूमिका रहा है। स्वामिनिक है कि उपन्यास का हितिहास और हितिहास बाह्य या गहरा संबंध रहा है। विभिन्न युगों तथा विभिन्न लेखकों में इस हितिहास दृष्टिकोण के अलग-अलग रूप पाए जाते हैं। इसे एक और बिगड़ भारत के लेखकों में उपनिवेश विरोधी तैयारी से इतिहास दृष्टि का निर्माण किया है तो इसरों और इसके प्रभाव कार्य समाजवाद के भाषण में नहीं हितिहास दृष्टि को प्रसारित किया है। उपन्यास की विषय वस्तु वास्तव में सामाजिक रही हो अथवा रैतिहासिक, हितिहास दृष्टि का भाषण को दृष्टि की रचनाओं में देखा जा सकता है। जहाँ रैतिहासिक उपन्यासों में इस दृष्टि को आसानी से लौटा जा सकता है वहीं सामाजिक व्याख्या की विषय वस्तु बनाने वाले उपन्यासों में फिर दृष्टि गहरी सौंदर्य का विषय होता है।

वास्तविकता और रैतिहासिक उपन्यासों पर मधुरेश की यह टिप्पणी व्याख्या है—

"मेंडलस्टोन ने रैतिहासिक उपन्यास की पहलवान एक नविकर रचना के रूप में की थी। इसका मानना था कि यह हितिहास और साहित्य दो परस्पर विरोधी माने जाने वाले तत्वों के मेल करता है और इसीलिए किसी को संतुष्ट नहीं कर पाता। हितिहासिक दृष्टि के बजाय उसका मूल्यांकन करता है तो ह्यूटी-सी साहित्यिक आगति की भी अवध करना उसके लिए कठिन होता है। ह्यूटी फ़ैक्ट, जब उसी रचना को आलोचक और रचनाकार या फिर सामाजिक पाठक भी, साहित्यिक दृष्टि के देखा है तो हितिहास के कारण उस पर गंभीर और लोकल होने का आरोप लगता है।" ¹

-------

¹ मधुरेश - हिंदी उपन्यास का विकास, पृ 159
वैसे साहित्य में रस घिसता की जो बात है उसमें पुस्तमृति का बाह्य होना स्वीकार नहीं किया जा सकता। ऐतिहासिक और सांस्कृतिक पुस्तमृति पर रिश्ते ज्ञाने वाले उपन्यासों की स्थली परम्परा है। ऐसे उपन्यासों के मूल्यांकन में भी साहित्यकार्य प्रतिमानों का प्रयोग उचित नहीं है। वस्तुतः हम उपन्यास में, यह वो है ऐतिहासिक ही वस्तु न हो, हितिहास के तपस्याओं की सत्यता की बात नहीं करते, वह हम लेख की हितिहास दृष्टि की जाप करते हैं।

हिंदी में भारतेन्दु-युग में ही हितिहास पर आधारित उपन्यास लिखे जाते रहे हैं। इस कुछ के उपन्यासों में सामाज सुधार तथा देश गौरव की भावना महत्वपूर्ण थी। अतः का गौरव और वास्तव की दार्शनिक दशा का विचार, मुख्य उद्देश्य था। यही कारण है कि इस कुछ के लेखकों में पुरातन वाद की हितिहास वैज्ञानिक का प्राधान्य है। किसी भी ऑपिनियनवादी व्यक्ति में हम प्राकृतिक है। सामाजिक उपन्यासों में भी पश्चिमी सम्प्रदाय के उपन्यास भाषा का हन का प्रयोग उठाया गया है। "परिचार कृत्रिम हो अथवा अवस्थाय हिंदु", हम उपन्यासों में अपनी संस्कृति का गौरव प्रकट किया गया है। वास्तव ही परीक्षण सम्प्रदाय की आवोज न के स्वर भी शुद्ध है। लेकिन इस कुछ के लेखकों में भी उस आवेशनात्मक वैज्ञानिक विषय का विचार नहीं हुआ था क्योंकि हितिहास के उपन्यासों को प्रकट कर पाए।

हितिहास पर आधारित उपन्यासों के प्रति प्रेरक रहनें है। हितिहास पर आधारित प्राकृतिक उपन्यास के नाटकों पर "गढ़ नुहों जवाई" का आरोप लगाया गया था। दोनों पुढ़क और उन्हीं प्रदेश के केंद्र गृहन्थ है। इसी प्राकृति के दृष्टिवाद का "गढ़ बुढ़हाड़" (1928 में प्रकाशित) पर विचार की। "ऐतिहासिक उपन्यास के प्रति प्रेरक का यह दुनियादी तंत्र के मूल दृष्टिवाद के पुढ़क वैज्ञानिक है। हमकृति का उनकी आवेशनात्मक की ही एक महत्त्वपूर्ण वैज्ञानिक हो सकती है। उसके समय तक ऐतिहासिक पुस्तमृति पर आधारित जो रचनायों उपलब्ध थी, उनमें मुक्तमानों का जो विचार था वह उन आवेशकार ने मैल नहीं लिखा।
था जो देश की स्वाधीनता की लड़ाई में एक सम्मिलित कार्यकर के बयान में प्रेमचन्द की भूमिका में बहुत महत्वपूर्ण था। प्रसाद की निश्चित हिंदुस्तान और आर्थ की प्राचीन संस्कृति पर मुर्ग थे, उसे आज की हिंदूवादी दृष्टि से उन्नियादी तौर पर भिन्न मानने हुए थे, उससे पुस्तकानों के लिए कोई जाह नहीं थी। जैनदार को लिखे गए अपने एक पत्र में प्रेमचन्द ने चुनौतियों और सांस्कृतिक पुस्तक उससे डिस्क प्रदान की है और उनकी इस चित्रों में उस पुस्तक और उसके लेख के प्रति मतलब की पवनि बहुत स्पष्ट है। 1

प्रेमचन्द के समय तक, हितिहास के संबंध में मार्क्सवादी दृष्टि से हितिहास की व्याख्या और मुल्यांकन की संभावना भी स्पष्ट नहीं हुई थी। अतः हितिहास के पृष्ठभूमि पर आधारित रचनाओं के संबंध में प्रेमचन्द का विरोध वस्तुतः स्वाधीनता आंदोलन में सामाजिक संवृत्ति की उनकी चित्रों के रूप में देखा जाना चाहिए।

शैतिहासिक उपन्यासों के दृश्य में वृद्धावनवाला वर्मा, चुनौतियों शास्त्री, आर्थ की हारी प्रसाद दिविनी, सित चन्द्रादित लिप्ट, राजीव सकेता आदि की हितिहास दृष्टि की चर्चा ने साथ-साथ राजकुमार चौधरी, श्यामलाल और रामेश राय जैसे मार्क्सवादी उपन्यासकारों की हितिहास दृष्टि का विषयन भी अनिवार्य है। ही के साथ प्रेमचन्द, अलेक्विट तथा अन्य उपन्यासकारों की हितिहास दृष्टि का एक संबंधता भी अंधेरे उपन्यास के विकास क्रम को समझने में सहायक होगा।

प्रेमचन्द हिंदी के प्रथम उपन्यासकार है, जिन्होंने आर्थ की अपने उपन्यासों में मूल्य उपजीवी कायम थे। यथाप्रकार उन्होंने हितिहास के किसी काल का चिह्न अथवा नाराज किसी उपन्यास की रचना नहीं की। परन्तु 'केम्पीौटैंग', रंगमूर्मित लतागोदानें जैसे उपन्यासों में अपने तत्कालीन समाज

--------------------

1. मधुरेश - हिंदी उपन्यास का विकास, पृ 166
को जिस जीवन्तता से निवृत्त किया है, सामाजिक बदलाव की गति को जिस प्रकार फड़ा है, उसके उनके हितिहास दृष्टि सम्पत्ति में आता है।

'कर्म भूमि में' किसानों की कार् दृष्टि और तत्कालीन सामाजिक कार्य दृष्टि की स्पष्ट किया गया है। एक कार्य के लेख में किसानों की जुगन्न चैतन्य तथा नई शिक्षा के लेख में उनके उदय को प्रेमचंद ने अन्य लेख में पहाड़ा है। वचनि जीवनार्त्त कार्य के भीतर के आन्तर्विकार को भी प्रेमचंद यहीं लेख से उठाए हैं। परन्तु उन्हीं उनकी हितिहास दृष्टि स्पष्ट रुप से वैज्ञानिक नहीं थी। हद्द निवृत्ति पर उनका विज्ञान था। इन्द्रमुखे में भारत के स्वाधीनता आदोलन का स्वतंत्र उपनिषदित के कथिक को 'व्यक्तिक' कहा गया है। कथिक के विभिन्न अचानक और कस्तर की उन्होंने यहीं लेख से उठाए हैं। भारतीय पुरातत्व कार्य का स्वतंत्र 'पुरातत्व' कार्य से सारांग का उनका चित्रण उनकी अद्वितीय हितिहास दृष्टि को स्पष्ट करता है।

'गौदाने' यथापि एक भारतीय किसान की त्रस्त रूप है। परन्तु यह उपन्यास में भी तत्कालीन समस्याओं और उनके परिवर्तन की गति को स्पष्ट किया गया है। विभिन्न कार्य की भूमिका का ऐसा वर्णन, उनकी वैज्ञानिक हितिहास दृष्टि को जाता है। अश्विन का उपन्यास 'शैखर': एक वीणूक, यथापि एक व्यक्तिवादी न्योद्योगिक उपन्यास की कौन्त्रित में आता है, परंतु ब्रिटिश काल पर भारत में क्रान्तिकारी संघर्ष की एक भाग दिखाई पड़ती है। परंतु क्रान्तिकारी कार्य की भूमिका को किसी तरह ऐतिहासिक परिवर्तन में प्रस्तुत करने में अश्विन कार्य सफल नहीं हो पाये। उन्होंने 'क्रान्ति' तथा क्रांतिकारिता की हितिहास के प्रवाह से विच्छेद कर आपातिक के रंग में रंग दिया है।

ऐतिहासिक उपन्यास के वैज्ञानिक वर्णन भी वृद्धचर्चात्मक वर्ण न्योद्योगिक उपन्यास के नाम संरचित है। वर्ण जी की हितिहास दृष्टि भी विचित्र रही है। 'गढ़ झुंट्ठर', 'मृगनदि', 'क्रांति की राही' आदि उनके प्रसिद्ध उपन्यास हैं। लंबे स्वाधीनता संघर्ष के बीच उनके साहित्यिक संकलनों का निर्मित हुआ
यहाँ सामाजिक और उपनिवेशवादी इतिहास दृष्टि के दृष्टिकोण में वे स्वयं अपने इतिहास विवेचक का प्रयाग करते वाले लेखक रहे हैं। वृद्धावनलील वर्षों के उपन्यास, किशोरीलाल गोस्वामी के उपन्यासों के भिन्न सामाजिक और सामाजिक में संबंधित होने और उनके अन्य प्राचीन भारत को उत्थान का हृदय भी मूल्यः अपने चरित्र में सामाजिक चित्तवाद दृष्टि के उदाहरण हैं। सती की गरिमा का श्रद्धांजलि और निर्जीव भोग सामग्री के भिन्न उनके अस्तित्व का आगाढ़ उनके उपन्यासों को एक भिन्न धरातल देता है। इतिहास वृद्धावनलील वर्षों के लिए नई अवधि पत्ता नहीं था। न ही वे अपने कल्पना पर इतिहास के प्रकाश प्रत्यायोगणन के उद्देश्य से इतिहास की ओर जाते हैं। वे एक स्वाधीन और शक्तिशाली राष्ट्र की सक्षमता के प्रति सम्पर्क लेखक के उदाहरण हैं।

प्रेतिहासिक उप-यास लेख में आचार्य चुरुसेन शास्त्री का नाम भी उल्लेखनीय है। विशेष उन्होंने नियुक्त सामाजिक रचना की है। फिर भी रेवशाली की नाकाध्यू, बिन्धु रचना और रेवशाली बीसे उपन्यासों के कारण ही उनकी स्पष्टता अधिक है। रेवशाली की नाकाध्यू में प्राचीन भारत में गणराज्य प्रथान साम्राज्य में नारी की स्थिति को नियत किया है। यही प्रकार रेवशाली में उन्होंने महसूस गजनकी के चरित्र को और अधिक सेवा करने वाले प्रदान किया है। साथ ही उन्होंने जासोसी और धार्मिक संथाल के कारण विपक्षित होते राष्ट्र के प्रति भी अपनी चिंता प्रकट की है। वस्तु: शास्त्री की ने तत्कालीन समय में प्रस्तुत प्रसंग को प्रतिपादक के संदर्भ में देखने की कोशिश की है।

आचार्य ह्यारीप्रसाद द्विवेदी के उपन्यास भी इतिहास के किसी कालिक का अपना उपवीत्य करते हैं। लेकिन उनकी दृष्टि मूल: सामाजिक रही है। वर्तमान की वस्तु, जो कि मूल: लोकवादी दृष्टि है, से द्विवेदी की

-----------------------
1. भुपेश - हिन्दी उपन्यास का विकास, पृ 163
हितिहास के कथा सूजी को पहले हैं। "अनामवाद का पोथे", "वाणिज्यकर्म की आत्मकला", "वास्तव बूढ़े लेख", "मनोविय" आदि उपन्यास उनके हस्ती दृष्टि के परिचारक हैं। नाती के प्रति कहली हुई दृष्टि दिवाली जी की पुल्लर विशेषता है।

राजु साहित्यायक, यसपल, राणी राघव ने भी हितिहास को आधार मानकर उपन्यास रचना की है। इन सबी लेखकों की हितिहास चैत्या पूर्णा मानल: मायाविद्वारी रही है। यसपल का "विवाह" हो या राणी राघव का "पुत्र" का टीला, इन उपन्यासों में हितिहास की व्याख्या, वर्णित दृष्टिकोण है की गई है। हितिहास की गति को वार्षिक के संघम के तम में देखा गया है।

तथा लोक तथा शौकित वर्ण के संघम में शौकित वर्ण की वर्ण दृष्टि को न्यायोपित ठहराया गया है। यथापि उन उपन्यास एक निष्कांश हितिहास दृष्टि में आधार पर लिखे गए हैं, परन्तु कलात्मक दृष्टि से भी उन उपन्यासों को उल्लेखनीय कहा जा सकता है। उपन्यासों में विवाहारा को तथ्यों पर आरोपित करने की कोशिश नहीं की गई है।

साथ के दशक के बाद भी हितिहास को कैंड़ा कर उपन्यासों की रचना की गई है तथा लेखकों ने विभिन्न हितिहास दृष्टियों को अपना कर उपन्यास रचना की है। कुछ लेखकों ने मायाविद्वारी दृष्टि को अपनाया है तो कुछ लेखक राजस्वादी दृष्टिकोण को अपनाते प्रतिदेश होते हैं। परन्तु इन विभिन्न लेखकों ने हिन्दी उपन्यास को एक समृद्ध दिशा प्रदान की है।

निष्पक्षत: कहा या सकता है कि हितिहास अत्यत के कालक्रम वर्णन की संग्रह है और हितिहासकथा अत्यत को देखने की दृष्टि है। उत: एक ही अत्यत को विभिन्न हितिहास दृष्टियों से देखा या सकता है जिससे अला-अला हितिहास सामने आ सकते हैं। चूंकि हितिहास तथ्य आधारित होता है, उत: फिरी भी हितिहास दृष्टि का निर्माण हमें अलोक में होना चाहिए।
हिति:स के बारे में आधुनिक धारणा के अनुसार हिति:स, वर्तमान के आलोक में अलिंद की व्याख्या है। अतः किसी भी रचनाकार की हिति:स दृष्टि समसामयिक यथार्थ से प्रभावित होती है। हालिंद किसी भी रचनाकार की हिति:स दृष्टि जानने के लिए, उस समसामयिक यथार्थ को भी जानना अनिवार्य है जिसमें रचनाकार, कार्यरत है।

साहित्य भी अपने यथार्थ का ही प्रतिबिंब है और अपने समकालीन यथार्थ के लिए उसे भी हिति:स का सहारा देना पड़ता है। वह अपने वर्तमान को सम्बन्धित के लिए हिति:स में जाता है। यह कारण उसके साहित्य में भी एक हिति:स दृष्टि अनिवार्य है के अन्तर्निहित होती है।

स्वयं हिंदी साहित्य तथा विशेष रूप से उपन्यास साहित्य में हिति:स को आधार मानकर अनेक रचनाएं हिंदी गढ़ है। प्रत्येक रचना में रचनाकार ने जिस हिति:स दृष्टि को अपनाया है, वह उसके युग से गहरी प्रभावित है।